नईदुनिया

अरुणाचल प्रदेश में प्रस्तावित 11,200 मेगावाट की परियोजना को लेकर स्थानीय युवाओं और समुदायों में विरोध

चीन के 'वाटर बम' के जवाब में भारत बना रहा सियांग बांध

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्लीः अरुणाचल प्रदेश में प्रस्तावित 11,200 मेगावाट क्षमता वाली सियांग बांध परियोजना को लेकर विवाद गहरा गया है। केंद्र सरकार इस परियोजना को चीन की ओर से ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपरी हिस्से में बनाई जा रही विशाल जलविद्युत परियोजना के मुकाबले देश की जल सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण मान रही है। वहीं, स्थानीय आदि समुदाय और युवा इसका विरोध कर रहे हैं। उन्हें आशंका है कि बांध बनने से उनकी पुश्तैनी जमीन, आजीविका, पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत प्रभावित होगी। सियांग नदी तिब्बत से निकलकर अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। यहां इसे सियांग या दिहांग कहा जाता है। आगे चलकर यह दूसरी नदियों से मिलकर ब्रह्मपुत्र बनाती है, जो असम से होते हुए बांग्लादेश पहुंचती है। स्थानीय समुदायों के लिए यह नदी जीवन का महत्वपूर्ण आधार है।

चीन की परियोजना से भारत की चिंता

चीन ने जुलाई 2025 में तिब्बत के मेडोग क्षेत्र में विशाल जलविद्युत बांध का निर्माण शुरू किया था। इसकी प्रस्तावित विद्युत उत्पादन क्षमता लगभग 60,000 मेगावाट बताई गई है। परियोजना पूरी होने पर यह विश्व की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना बन सकती है। इस पर लगभग 1.2 लाख करोड़ युआन के निवेश का अनुमान है। भारत की चिंता है कि नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित देश पानी छोड़ने के समय और मात्रा को प्रभावित कर सकता है। अचानक अधिक पानी छोड़े जाने या नदी के प्रवाह में बदलाव से निचले क्षेत्रों में बाढ़ प्रबंधन और जल सुरक्षा संबंधी चुनौतियां पैदा हो सकती हैं। भारत सरकार का मानना है कि प्रस्तावित सियांग परियोजना में पानी का भंडारण करके नदी के प्रवाह में अचानक होने वाले उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने में सहायता मिल सकती है। इसके अलावा, इससे बिजली उत्पादन, बाढ़ प्रबंधन और पूर्वोत्तर क्षेत्र में आर्थिक अवसरों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

सरकार ने क्या कहा?

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने कहा है कि बांध निर्माण को लेकर अभी अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है। उनके अनुसार, विशेषज्ञों के आकलन में परियोजना अनुपयुक्त पाई गई तो सरकार आगे नहीं बढ़ेगी। किसी भी प्रस्ताव को पर्यावरण और सामाजिक प्रभाव के आकलन, विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन, आवश्यक स्वीकृतियों तथा प्रभावित समुदायों से बातचीत की प्रक्रिया से गुजरना होगा। विरोध कर रहे संगठनों ने परियोजना की प्रारंभिक व्यवहार्यता रिपोर्ट को निरस्त करने और सर्वेक्षण की प्रक्रिया रोकने की मांग की है। उनका कहना है कि शुरुआती सर्वेक्षण की अनुमति भविष्य में परियोजना का विरोध करना कठिन बना सकती है। इस तरह सियांग बांध को लेकर विवाद में एक ओर भारत की जल सुरक्षा और चीन की परियोजना से जुड़ी रणनीतिक चिंताएं हैं, तो दूसरी ओर स्थानीय समुदायों की जमीन, आजीविका, पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा का प्रश्न है।

स्थानीय लोग क्यों कर रहे विरोध?

परियोजना का विरोध कर रहे आदि समुदाय के लोगों का कहना है कि विशाल जलाशय बनने से उनकी पुश्तैनी जमीन डूब सकती है। इससे आजीविका, प्राकृतिक पर्यावरण और सांस्कृतिक पहचान को नुकसान पहुंचने की आशंका है। स्थानीय संगठनों का यह भी कहना है कि नदी और उससे जुड़े जीवन को समझने में स्थानीय समुदायों के अनुभव को महत्व दिया जाना चाहिए। सियांग क्षेत्र में बांधों का विरोध लगभग चार दशक से जारी है। पिछले तीन वर्षों में प्रस्तावित नई परियोजना को लेकर विरोध तेज हुआ है। स्थानीय पत्रकार टोंगम रीना के अनुसार, महिला प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस के इस्तेमाल से युवाओं में नाराजगी बढ़ी है। 23 अक्टूबर को विरोध प्रदर्शन के दौरान हिंसा और तोड़फोड़ की घटनाएं हुईं। स्थानीय नेताओं के घरों, पुलिस थाने और परियोजना से जुड़ी सरकारी कंपनी के कार्यालय में आगजनी तथा नुकसान की खबरें सामने आईं। इसके बाद पूर्वी सियांग जिले में तनाव बना रहा और सुरक्षा बलों की तैनाती की गई।

उप्र भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति घोषित, मोदी और योगी समेत 30 स्थायी आमंत्रित सदस्य

प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने जारी की सूची, 548 कार्यसमिति सदस्यों और 134 विशेष आमंत्रित सदस्यों को भी मिली जगह

नईदुनिया ब्यूरो, लखनऊः उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश कार्यसमिति-2026 की घोषणा कर दी है। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की ओर से जारी सूची में 548 कार्यसमिति सदस्य, 30 स्थायी आमंत्रित सदस्य और 134 विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल हैं। सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी सहित कई प्रमुख नेताओं के नाम हैं।

स्थायी आमंत्रित सदस्यों में प्रमुख नाम

स्थायी आमंत्रित सदस्यों की सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और बृजेश पाठक शामिल हैं। इनके अलावा भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी, पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी और मुख्तार अब्बास नकवी को भी स्थान दिया गया है। सूची में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रेखा वर्मा और तारिक मंसूर, राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी, राष्ट्रीय मंत्री भोला सिंह और संगीता यादव के नाम भी शामिल हैं। केंद्रीय मंत्रियों हरदीप सिंह पुरी, बीएल वर्मा, कमलेश पासवान, जितिन प्रसाद, एसपी सिंह बघेल और कीर्तिवर्धन सिंह को भी स्थायी आमंत्रित सदस्य बनाया गया है। इसके अलावा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश सिंह, विनय कटियार, रमापति राम त्रिपाठी, सूर्य प्रताप शाही, लक्ष्मीकांत बाजपेयी, महेंद्र नाथ पांडेय, स्वतंत्र देव सिंह और भूपेंद्र सिंह चौधरी के नाम भी सूची में शामिल हैं।

30 और 31 अक्टूबर को होगी बैठक

प्रदेश कार्यसमिति की घोषणा ऐसे समय हुई है, जब भाजपा आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी है। लखनऊ में 30 और 31 अक्टूबर को प्रदेश कार्यसमिति की बैठक प्रस्तावित है। इसमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के शामिल होने की संभावना है। बैठक में संगठनात्मक गतिविधियों और आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों पर चर्चा होने की उम्मीद है।

134 विशेष आमंत्रित सदस्यों की सूची भी जारी

भाजपा ने 134 विशेष आमंत्रित सदस्यों के नामों की भी घोषणा की है। इनमें अरुण सिंह, राधा मोहन दास अग्रवाल, सुरेंद्र नागर, राजेश अग्रवाल, राजकुमार चाहर, गौरव भाटिया, बेबी रानी मौर्य और सुरेश खन्ना सहित कई नेताओं को जगह दी गई है। प्रदेश कार्यसमिति के 548 सदस्यों में विभिन्न क्षेत्रों और जिलों से जुड़े नेताओं को शामिल किया गया है। इससे प्रदेश संगठन के अलग-अलग स्तरों के पदाधिकारियों और नेताओं को कार्यसमिति में प्रतिनिधित्व मिला है।

'दिमागी नक्सल' और 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' को पनपने न दें: सुवेंदु

नईदुनिया ब्यूरो, तमलुकः पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने सोमवार को लोगों से 'दिमागी नक्सल', 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' और कॉकरोचों को पनपने नहीं देने की अपील की। उन्होंने लोगों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़े होने का आह्वान किया। सुवेंदु ने ये बातें तमलुक में भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय के भूमि पूजन के बाद पत्रकारों से बातचीत में कहीं।

दो दिनों में यह दूसरी बार है, जब सुवेंदु ने 'कॉकरोच पार्टी' कहकर विरोधियों पर निशाना साधा। रविवार को रामनगर में एक कार्यक्रम के दौरान भी उन्होंने कॉकरोच और खटमल जैसी बुराइयों की तुलना कोरोना विषाणु से करते हुए कहा था कि इन्हें कीटनाशक छिड़काव से ही खत्म किया जा सकता है। सुवेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी की सरकार ने तुष्टीकरण की राजनीति की और राज्य की विरासत तथा संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया। उन्होंने दावा किया कि ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल को 'ग्रेटर बांग्लादेश' में बदलना चाहती थीं। उन्होंने वामपंथी सरकारों और तृणमूल कांग्रेस पर भी निशाना साधा। सुवेंदु के अनुसार, लंबे समय तक सत्ता में रहने के बावजूद इन सरकारों ने राज्य की सांस्कृतिक विरासत को नुकसान पहुंचाया। सुवेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस सरकार ने शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय कैडेट कोर में विद्यार्थियों के नामांकन को रोकने की कोशिश की।

नेपाल का करनाली राजमार्गः एक ओर पहाड़, दूसरी ओर गहरी खाई

प्राकृतिक सुंदरता के बीच जोखिम भरा सफर, संकरे रास्तों और तीखे मोड़ों पर दुर्घटनाओं का खतरा

काठमांडू, एजेंसीः नेपाल का करनाली राजमार्ग अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, लेकिन यहां सफर करना किसी चुनौती से कम नहीं है। एक ओर ऊंचे पहाड़ और दूसरी ओर गहरी खाइयां इस मार्ग को बेहद जोखिम भरा बनाती हैं। संकरे रास्ते, तीखे मोड़ और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियां यहां यात्रा को कठिन बना देती हैं।

करनाली क्षेत्र नेपाल के सबसे दुर्गम इलाकों में शामिल है। यहां सड़कें पहाड़ों को काटकर बनाई गई हैं। कई स्थानों पर रास्ते इतने संकरे हैं कि दो वाहनों का एक साथ निकलना मुश्किल हो जाता है। पहाड़ी ढलानों के किनारे बनी सड़क पर वाहन चालकों को बेहद सावधानी से आगे बढ़ना पड़ता है। थोड़ी सी लापरवाही भी गंभीर दुर्घटना का कारण बन सकती है।

इस राजमार्ग पर यात्रा के दौरान मौसम भी बड़ी चुनौती है। बारिश के समय पहाड़ों से पत्थर गिरने, भूस्खलन होने और सड़क पर कीचड़ जमा होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसी परिस्थितियों में वाहनों का नियंत्रण बनाए रखना कठिन हो जाता है। कई जगह सड़क के किनारे सुरक्षा दीवारों और अन्य सुरक्षा व्यवस्थाओं की कमी भी चिंता का विषय बनती है।

करनाली राजमार्ग आसपास के दुर्गम क्षेत्रों को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण मार्ग है। स्थानीय लोगों के लिए यह आवागमन, व्यापार और आवश्यक सेवाओं तक पहुंचने का प्रमुख साधन है। इसके बावजूद सड़क की भौगोलिक बनावट और कठिन परिस्थितियां यात्रा को जोखिमपूर्ण बनाती हैं।

यहां से गुजरने वाले वाहन चालकों को तीखे मोड़ों पर गति कम रखने, सामने से आने वाले वाहनों का ध्यान रखने और मौसम की स्थिति के अनुसार यात्रा करने की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से रात के समय दृश्यता कम होने से खतरा और बढ़ सकता है।

करनाली राजमार्ग नेपाल की प्राकृतिक सुंदरता और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों का अनूठा उदाहरण है। यहां पहाड़ों और घाटियों के मनमोहक दृश्य यात्रियों को आकर्षित करते हैं, लेकिन इसी मार्ग पर सुरक्षित यात्रा के लिए सतर्कता और सावधानी बेहद जरूरी है।

कथावाचकों की महँगी जीवनशैली पर देवी चित्रलेखा ने क्या कहा?

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्लीः प्रसिद्ध कथावाचिका देवी चित्रलेखा धार्मिक प्रवचन करने वालों की महंगी जीवनशैली को लेकर चर्चा में हैं। कुछ समय पहले लाल रंग की महंगी फरारी कार के कारण उन्हें सामाजिक माध्यमों पर आलोचना का सामना करना पड़ा था। अब कथावाचकों के रहन-सहन और विलासितापूर्ण जीवन को लेकर उनके विचार चर्चा का विषय बने हैं।

देवी चित्रलेखा धार्मिक कथाओं और भक्ति प्रवचनों के लिए जानी जाती हैं। उनके अनुयायी बड़ी संख्या में हैं। हालांकि, महंगी गाड़ियों और अन्य विलासिता की वस्तुओं को लेकर धार्मिक कथावाचकों की जीवनशैली पर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। चित्रलेखा भी इसी चर्चा के केंद्र में रही हैं।

लाल फरारी कार से जुड़ी तस्वीरें सामने आने के बाद लोगों ने उनकी जीवनशैली को लेकर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दी थीं। कुछ लोगों ने धार्मिक प्रवचन करने वालों से सादगी अपनाने की अपेक्षा जताई, जबकि अन्य ने इसे किसी व्यक्ति की निजी पसंद और आर्थिक स्वतंत्रता से जुड़ा विषय बताया।

धार्मिक कथावाचकों की लोकप्रियता बढ़ने के साथ उनके रहन-सहन, महंगी वस्तुओं और सार्वजनिक छवि पर भी चर्चा होती रही है। कई कथावाचक बड़े धार्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं और उनके प्रवचनों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। चित्रलेखा के बयान को इसी व्यापक चर्चा के संदर्भ में देखा जा रहा है। धार्मिक प्रवचन करने वालों से कुछ लोग सादगी और त्याग की अपेक्षा रखते हैं, जबकि दूसरे लोग मानते हैं कि धार्मिक कार्यों से जुड़े व्यक्तियों को भी अपनी कमाई के अनुसार जीवन जीने का अधिकार है। हालांकि, उपलब्ध जानकारी में चित्रलेखा के बयान का पूरा विवरण नहीं है। इसलिए उनके विचारों के विशिष्ट आशय या कथावाचकों की विलासितापूर्ण जीवनशैली पर उनकी टिप्पणी के बारे में अतिरिक्त निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा।

न्यायाधीशों में आपसी सम्मान और संयम जरूरी

नईदुनिया ब्यूरो, कोच्चिः केरल उच्च न्यायालय ने कहा है कि न्यायाधीशों के बीच कानून के सवालों पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन आपसी सम्मान, संयम और न्यायिक शिष्टाचार बनाए रखना जरूरी है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि उच्च न्यायालय के सभी न्यायाधीश समान दर्जे के होते हैं और कोई भी पीठ दूसरी पीठ पर संस्थागत श्रेष्ठता का दावा नहीं कर सकती। न्यायमूर्ति देवन रामचंद्रन और न्यायमूर्ति बसंत बालाजी की खंडपीठ ने यह टिप्पणी तिरुवनंतपुरम सेवा सहकारी बैंक के एक कर्मचारी की अपील पर 15 अक्टूबर को दिए गए फैसले में की। न्यायालय की ओर से 26 अक्टूबर को जारी जानकारी में इस निर्णय का विवरण दिया गया।

खंडपीठ ने कहा कि समान स्तर के न्यायाधीशों के बीच संयम न्यायिक अनुशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह केवल बाध्यकारी न्यायिक नजीरों के पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पीठों के बीच शिष्टाचार, सम्मान और सामंजस्य भी शामिल हैं। न्यायिक निर्णयों में एकरूपता और लोगों का भरोसा बनाए रखने के लिए इन सिद्धांतों का पालन आवश्यक है।

न्यायालय ने स्पष्ट किया कि अपीलीय खंडपीठ किसी एकल न्यायाधीश के फैसले से असहमत होकर उसे रद्द कर सकती है या उसमें बदलाव कर सकती है। हालांकि, ऐसा करने का अधिकार संबंधित न्यायाधीश पर श्रेष्ठता स्थापित नहीं करता। एकल न्यायाधीश और खंडपीठ, दोनों संविधान के अनुच्छेद 226 के अंतर्गत उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र का उपयोग करते हैं। न्यायालय ने यह भी कहा कि मुख्य न्यायाधीश का पद भी समान लोगों में प्रथम होने के सिद्धांत पर आधारित है।

मामला तिरुवनंतपुरम सेवा सहकारी बैंक के एक कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए समय बढ़ाने से जुड़ा था। कर्मचारी ने श्रम न्यायालय के आदेश को चुनौती दी थी। मामले की सुनवाई के दौरान बैंक को कार्रवाई पूरी करने के लिए अतिरिक्त समय देने के निर्णय पर सवाल उठाए गए। खंडपीठ ने माना कि श्रम न्यायालय के पास समय बढ़ाने का अधिकार है, लेकिन इस मामले में देरी के कारणों और कर्मचारी की आपत्तियों पर पर्याप्त विचार नहीं किया गया।

महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण आंदोलन खत्म कराने 500 करोड़ देने का आरोप

नईदुनिया ब्यूरो, मुंबईः महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण आंदोलन से जुड़े 500 करोड़ रुपये के कथित धन विवाद को लेकर राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के सांसद संजय राउत ने मामले की प्रवर्तन निदेशालय से जांच कराने की मांग की है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर इस कथित प्रकरण की जांच कराने का आग्रह किया है। विवाद एक कथित ध्वनि रिकॉर्डिंग से जुड़ा है, जिसमें मराठा आरक्षण आंदोलन को समाप्त कराने के लिए आंदोलनकारी मनोज जरांगे पाटिल को 500 करोड़ रुपये देने की कथित कोशिश का दावा किया जा रहा है। इस मामले में शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे और उनके पिता एकनाथ शिंदे के नाम सामने आने की बात कही गई है। संजय राउत ने कथित धनराशि को लेकर सवाल उठाए हैं। उन्होंने पूछा है कि इतनी बड़ी रकम कहां से आई और इसे कहां भेजा गया। उन्होंने इस मामले की जांच कराकर वास्तविक स्थिति स्पष्ट करने की मांग की है। हालांकि, कथित ध्वनि रिकॉर्डिंग और उसमें लगाए गए आरोपों की सत्यता की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। जानकारी के आधार पर इन आरोपों को प्रमाणित तथ्य नहीं माना जा सकता। मराठा आरक्षण आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता मनोज जरांगे पाटिल ने भी मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, एकनाथ शिंदे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से इस मामले में हस्तक्षेप करने की अपील की है।

तीनों सेनाओं के लिए 2.12 लाख करोड़ रुपये के रक्षा प्रस्ताव मंजूर

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्लीः देश की रक्षा तैयारियों को मजबूत करने के लिए रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 2.12 लाख करोड़ रुपये के रक्षा खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दी है। इन प्रस्तावों के तहत तीनों सेनाओं के लिए हथियारों और सैन्य उपकरणों की खरीद का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

रक्षा अधिग्रहण परिषद द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों में वशोराड्स यानी बहुत कम दूरी पर हवाई खतरों को नष्ट करने वाली वायु रक्षा प्रणाली और हेलिकॉप्टर सहित विभिन्न सैन्य उपकरणों की खरीद शामिल है। इन उपकरणों का उद्देश्य सशस्त्र बलों की परिचालन क्षमताओं को मजबूत करना है। स्वीकृत प्रस्तावों के माध्यम से थल सेना, नौसेना और वायु सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने पर जोर दिया गया है। आधुनिक हथियार प्रणालियों और सैन्य उपकरणों की खरीद से तीनों सेनाओं की तैयारियों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। रक्षा अधिग्रहण परिषद रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत रक्षा खरीद से जुड़े महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर निर्णय लेने वाली प्रमुख संस्था है। परिषद की मंजूरी के बाद संबंधित प्रस्तावों पर आगे की प्रक्रिया बढ़ाई जाती है। कुल 2.12 लाख करोड़ रुपये के प्रस्तावों को मंजूरी रक्षा क्षेत्र में सैन्य क्षमताओं को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सियासत *दो साल से जारी विरोध प्रदर्शनों के बीच चुनाव में छात्रों को बढ़त, संसद की 250 में से 135 सीटें मिलने का अनुमान...*

सर्बिया में छात्र गठबंधन की जीत, वुचिच की पार्टी को झटका

बेलग्रेड, एजेंसीः सर्बिया में छात्र संगठनों के गठबंधन 'स्टूडेंट लिस्ट' ने चुनाव में जीत हासिल की है। पूर्व राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वुचिच की पार्टी को हार का सामना करना पड़ा है। वुचिच रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के करीबी माने जाते हैं और इस चुनाव में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार थे। उन्होंने सितंबर में राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया था। वुचिच के अनुसार, छात्र गठबंधन को संसद की कुल 250 सीटों में से कम से कम 135 सीटें मिलने का अनुमान है, जबकि उनकी पार्टी को लगभग 105 सीटें मिल सकती हैं। छात्र गठबंधन को करीब 22 लाख मत मिले, जबकि वुचिच की पार्टी को लगभग 17.2 लाख मत प्राप्त हुए। हालांकि, अंतिम आधिकारिक परिणाम अभी घोषित नहीं किए गए हैं।

दो साल से जारी था विरोध प्रदर्शन

सर्बिया में छात्र संगठन पिछले दो वर्षों से सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। प्रदर्शनकारियों ने सरकार पर भ्रष्टाचार और तानाशाही को बढ़ावा देने के आरोप लगाए थे। चुनाव में छात्र गठबंधन की सफलता को इसी आंदोलन से जोड़कर देखा जा रहा है।

सड़कों पर उतरे लोग

वुचिच की हार स्वीकार करने के बाद राजधानी बेलग्रेड सहित कई शहरों में लोगों ने जश्न मनाया। हजारों लोग सड़कों पर उतर आए। लोगों ने सर्बिया के झंडे लहराए, वाहनों के हॉर्न बजाए और पटाखे फोड़कर खुशी जताई। जश्न मनाने वालों में बड़ी संख्या युवाओं की थी। चुनाव में लगभग 70 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। वर्ष 1992 में यूगोस्लाविया के विघटन के बाद इसे सबसे अधिक मतदान वाले चुनावों में से एक माना जा रहा है। छात्र गठबंधन की जीत और वुचिच की पार्टी के पीछे रहने के बीच अब सभी की नजरें अंतिम आधिकारिक चुनाव परिणामों पर हैं।